॥ श्री सत्यनारायण जी की आरती ॥

जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ॥
जय लक्ष्मी रमणा

रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत निराजन घन्टा ध्वनि बाजे ॥
जय लक्ष्मी रमणा

प्रकट भये कलि कारन द्विज को दर्श दियो ।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो ॥
जय लक्ष्मी रमणा

दुर्बल भील कराल ईन पर कृपा करी ।
चन्द्र चूड़ एक राजा तिनकी विपत्ति हरी ॥
जय लक्ष्मी रमणा

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ॥
जय लक्ष्मी रमणा

भाव भक्ति के कारण छिन छिन रुप धरयो ।
श्रद्धा धारन कीनी तिनको काज सरयो ॥
जय लक्ष्मी रमणा

ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।
मन वांछित फल दीन्हां दीनदयाल हरी ॥
जय लक्ष्मी रमणा

ચઢત પ્રસાદ સવાયો કદલી ફલ મેવા ।
ધૂપ દીપ તુલસી સે રાજી સત્યદેવા ।
જય લક્ષ્મી રમણા
શ્રી સત્યનારાયણ જી કી આરતી જો કોઈ નર ગાવે ।
કહત શિવાનન્દ સ્વામી મન વાંછિત ફલ પાવે ।
જય લક્ષ્મી રમણા